प्रोग्रेसिव एज़्युकेशन सोसायटी का
मॉडर्न कला, विज्ञान और वाणिज़्य महाविद्यालय (स्वायत्त)
पुणे-४११००५, महाराष्ट्र
हिंदी विभाग

द्वारा प्रकाशित

" अरुणिमा"

(मासिक पत्रिका)

नवंबर: २०२०

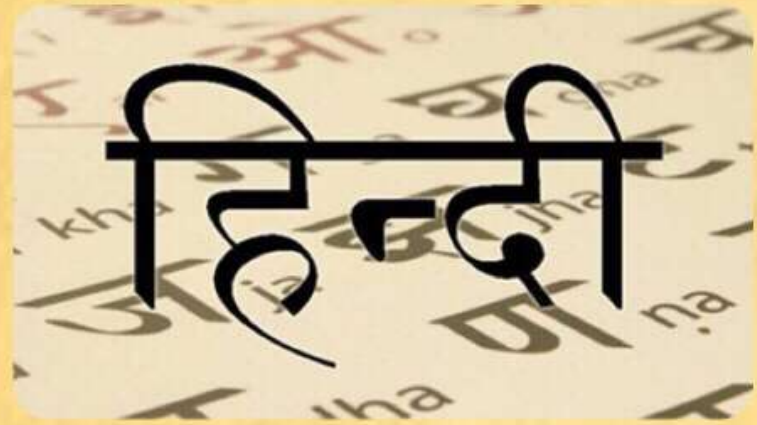

प्रकाशक:
प्रा. शामकांत देशमुख,
डॉ. राजेंद्र झुंजारराव
संपादक: डॉ. प्रेरणा उबाळे
सहायक: अनिसा शेख़

१.कविता : सूरज
अनिसा शेख़,
एम. ए. हिंदी साहित्य, द्वितीय वर्ष

🌞"सूरज"🌞
दूर अभी है सूरज हमसे
सूरज तक यदि जाना है,
उषा से विजित लौह सी
काया को अपनाना है।
सूरज नही महल का राजा
सूरज नही सड़क का वासी।
वह तो दग्ध आग का गोला
सूरज नही वन का वासी,
उसको छूने की कोशिश में
आगे बढ़ते जाना है।
कल्प मान्यताएँ मुखारित हों
तो सूरज श्रद्धेय हमारा।
जन का, धन का स्वामी है वह
सूरज ही है ध्येय हमारा,
उसकी किरणों को छूकर के
निरंतर आगे बढ़ते जाना है।
दूर अभी है सूरज हमसे
सूरज तक यदि जाना है,
उषा से विजित लौह सी
काया को अपनाना है।

२.कविता : अस्वस्थ श्वास
दिनकर चौगुले,
एम. ए. हिंदी साहित्य, द्वितीय वर्ष

अस्वस्थ श्वास

मिल जाता हूं अक्सर सिसकते
बच्चोंसे....
फॅमिली कोर्ट में।
जिनके मां-बाप मिलते है कोर्ट में
हर तारीख पे।
राह देख रहे है, ...डिव्होर्स की।
मेरे मनका मात्र कोलाहल बढता है
बच्चोंकी अंतस्थ पुकार से।

मनका कोलाहल और बढता है
जब सिग्नलपर,
कार के काचपर टकटक करके,
गुलाब के फूल बेचते,
नन्हे बच्चे...भूखे .. प्यासे... !
और सिग्नल के नीचे
तपती सडक पर, बैठी उनकी मां !

मनका कोलाहल और बढता है,
जब फूटपाथ पे, ढोल के आवाज पर
देखता हूं, बच्चों के टेढे नाच
पैसो के लिए।
और, तीखी मिर्ची के साथ
उनका वडापाव खाना।

मनमे उठते है तरंग सवालोंके
कैसी होगी उनकी कलकी सुबह
और
फिर आनेवाली और एक
सुबह.....!

जन्मदिन विशेष: नेहरू के इंदिरा को लिखे पत्र सभ्यता, मज़हब और भारतीय संस्कृति की सबसे सुंदर परिभाषा हैं

''पिता के पत्र' महज एक किताब का नाम नहीं है बल्कि यह एक पिता की भूमिका में बेटी को लिखे गए वह पत्र हैं जो सभ्यता की सबसे सुंदर और सरल व्याख्या करती है.

नई दिल्ली: ''पिता के पत्र' महज एक किताब का नाम नहीं है बल्कि यह एक पिता की भूमिका में बेटी को लिखा गया जवाहर लाल नेहरू के वह पत्र हैं जो सभ्यता की सबसे सुंदर और सरल व्याख्या करती है. किताब में एक तरफ नेहरू के विचार हैं तो वहीं उन विचारों को कहानी के सम्राट प्रेमचंद ने इतनी सरल भाषा में पेश किया है कि पत्र सिर्फ पत्र न रहे बल्कि पिता और बेटी के बीच की भावनात्मक कहानी बन गई.

यह पत्र जवाहरलाल नेहरू ने बेटी इंदिरा को लिखे थे. इन पत्रों के संग्रह 'लेटर फ्रॉम फादर टू हिज डॉटर' नाम की पुस्तक में छपी जिसे बाद में प्रेमचंद ने हिन्दी में अनुवाद किया. ''पिता के पत्र'' किताब में नेहरू का कुदरत के प्रति लगाव और बेटी का देश-दुनिया के सरोकारों के प्रति एक दृष्टि विकसित कर सकने की चिंता देखी जा सकती है. इस किताब में जो पत्र हैं वह जवाहर लाल नेहरू ने 1928 में लिखी थी. उस वक्त इंदिरा गांधी सिर्फ 10 साल की थीं.

१ चाचा नेहरू के हम है बच्चे प्यारे,
मां-बाप के राज दुलारे,
आ गया है चाचा जी का जन्मदिवस,
आओ मिलकर मनाये बाल दिवस।

२ विफलता तभी होती है
जब हम अपने आदर्शों,
उद्देश्यों और सिद्धांतों को भूल जाते
हैं।
-पं. जवाहर लाल नेहरू